दिव्य लीलामृत

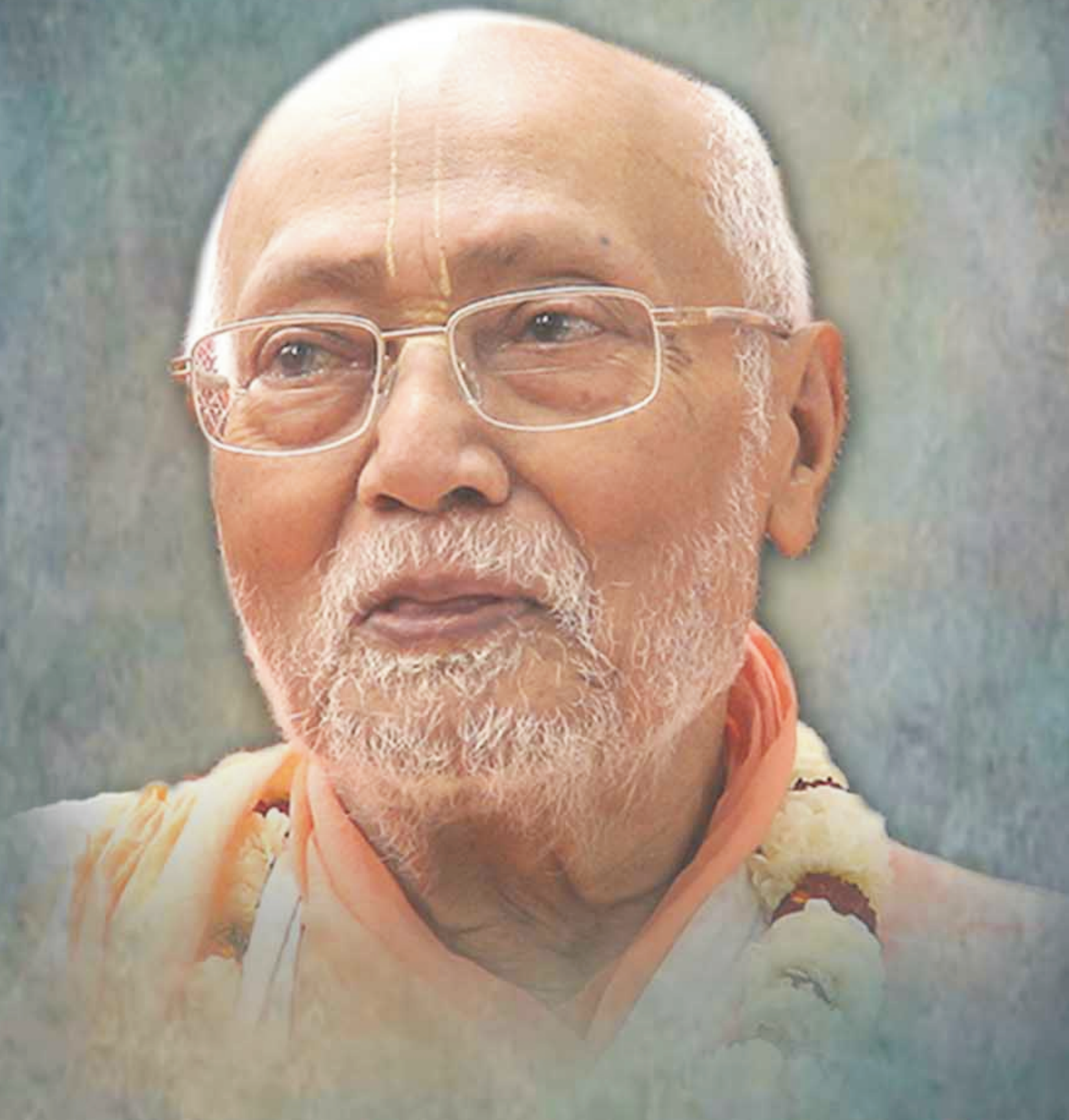

वहाँ श्रीराधाकृष्ण हैं

श्रीश्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ
गोस्वामी महाराज जी

SGD

"तब उन्होंने छत पर लगी बत्ती की ओर इंगित करते हुए कहा, "वहाँ राधाकृष्ण हैं; क्या आप उन्हें साथ नहीं ले जाएंगे?" श्रील गुरुदेव की इस बात से मंत्रमुग्ध हम, भला उन्हें क्या उत्तर देते?"

SGD

श्रीलगुरुदेव

SGD

हम श्रील परमगुरुदेव का आलेख्य, उनका पावन जीवन चरित्र ग्रन्थ और उनके द्वारा श्रील गुरुदेव को दी गई जप-माला अस्पताल ले आए। हमने श्रील गुरुदेव को, श्रील परमगुरुदेव की अंतिम वाणी पढ़कर सुनाई और उनका आलेख्य दिखाया। वे केवल कुछ समय के लिए शांत हुए और वापस कहने लगे, "मुझे वहाँ ले चलो।" उस समय

राधाकांत प्रभु ने छत की ओर इंगित करते हुए भक्तियुक्त कौशलता के साथ उनसे कहा, “आप उस बत्ती (प्रकाश) की ओर देखिए, वहाँ राधाकृष्ण हैं।” श्रील गुरुदेव ने आनंद और आश्चर्य व्यक्त कर उस बत्ती पर अपने दिव्य नेत्रों को स्थिर कर दिया और पूर्ण रूप से उसमें मग्न हो गए।

श्रील गुरुदेव की यह लीला, मुझे, श्रीचैतन्य चरितामृत (मध्य-लीला, 3/25-27) में

श्रील कविराज गोस्वामी द्वारा वर्णित श्रीमन् महाप्रभु की एक लीला का स्मरण दिलाती है। श्रीमन् नित्यानंद प्रभु श्रीचैतन्य महाप्रभु को गंगा के निकट ले आए और बोलें, “सामने यमुना का दर्शन कीजिए।” श्रीचैतन्य महाप्रभु ने भावावेश में गंगा को यमुना मान लिया और वे यमुना को उद्देश्य करते हुए स्तव करने लगे। इसी प्रकार, श्रील गुरुदेव तन्मयता से, राधाकृष्ण उस बत्ती में है यह समझकर उसकी ओर ही देखते रहे और ध्यान में मग्न हो

गए। वे धीरे-धीरे विश्राम में चले गए। विश्राम समाप्त होते ही, उनके कमलनयन दुबारा उस बत्ती पर स्थिर हो गए। वे दिन-भर उस बत्ती को ही देखते रहे, जिसमें राधाकृष्ण है—ऐसा इंगित किया गया था। बीच-बीच में हमने उन्हें प्रसाद खिलाने का प्रयास किया, किन्तु वे मुख मोड़ लेते थे। उन्होंने हमसे बात करना बंद कर दिया।

श्रील गुरुदेव की स्वास्थ्य की स्थिति अभी भी चिंताजनक

थी। हम असमंजस में पड़ गए कि क्या अस्पताल में रहकर उनका उपचार जारी रखें या परिणाम की ओर ध्यान नहीं देते हुए उनकी इच्छा के अनुसार उन्हें मठ में वापस ले जाए। किन्तु हमें इस बात की पुष्टि नहीं मिल रही थी कि वे कहाँ और किस कारण से हैं, उस बात से वे अवगत हैं भी कि नहीं। ऐसी स्थिति में निर्णय लेना हमारे लिए बहुत चुनौतीपूर्ण था। फिर भी, यह बात सुनिश्चित थी कि अस्पताल में रुकने से उनकी व्याकुलता बढ़ रही थी।

हमारा पूर्व अनुभव भी बताता है कि वे सदैव मठ में ही रहना पसंद करते हैं, चाहे उनकी शारीरिक स्थिति कितनी भी गंभीर क्यों न हो।

अस्पताल के ये दो दिन हमें दो वर्षों की तरह अनुभव हुए, और श्रील गुरुदेव को संभवतः इससे कई गुना अधिक। 10 सितंबर की सुबह, हमने आपस में विचार-विमर्श और चिकित्सक से परामर्श करने के बाद यह निर्णय लिया कि हम

श्रील गुरुदेव को मठ में ले जाएंगे और वहीं पर अन्य-अन्य सेवाओं के साथ चिकित्सा उपचार भी प्रदान करेंगे।

जब अस्पताल से छुट्टी की सभी औपचारिकताएं पूरी हो गईं और हम मठ के लिए रवाना होने की तैयारी करने लगे, तब श्रील गुरुदेव ने पूछा, "क्या आपने सारा सामान बांध लिया है?" हमने 'हाँ' में उत्तर दिया। तब उन्होंने छत पर लगी बत्ती की ओर इंगित करते हुए कहा,

“वहाँ राधाकृष्ण हैं; क्या आप उन्हें साथ नहीं ले जाएंगे?” श्रील गुरुदेव की इस बात से मंत्रमुग्ध हम, भला उन्हें क्या उत्तर देते? हमने उन्हें केवल इतना ही कहा कि हम अस्पताल से निकलते समय उन्हें भी साथ ले जाएंगे। तब उन्होंने कहा, “भूलना नहीं।”

श्रील गुरुदेव की इस बात ने हमें स्तब्ध कर दिया। वैसे तो उन दिनों वे विस्मरण लीला का प्रदर्शन कर रहे थे, किन्तु एक

साधारण सी बात जो हमने केवल उन्हें कुछ समय व्यस्त रखने के लिए प्रयोग की थी, उसको वे क्यों नहीं भूलें? क्योंकि वास्तव में, वे उस प्रकाश में अपने आराध्यदेव का दर्शन कर रहे थे। उनके लिए तो उनके गुरुदेव, वैष्णव और राधाकृष्ण ही प्राण-स्वरूप हैं, अर्थात् अविस्मरणीय हैं।

Play Store

SrilaGurudeva

SGD